चन्देरी के चंद्रप्रभु

(पूजन-आरती-चालीसा)

रचयिता

बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रकाशक

श्री जैनोदय विद्या समूह

कृति	:	चन्देरी के चंद्रप्रभु
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
टाइपिंग सहयोग	:	कुमारी सुष्टि (अनु) जैन चनुटया
संस्करण	:	प्रथम
प्रसंग	:	हाटकापुरा चन्देरी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 2019
आवृत्ति	:	1000
लागत मूल्य	:	15/-
प्राप्ति स्थान	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना संपर्क–94251-28817
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

स्व. श्री आलमचंद एवं प्रकाशचंद की स्मृति में

फूलाबाई, कमलेश-शकुन्तला, संतोष-अनीता, सुरेश-मणि, मोनिका, रीतेश-प्रियंका, रेशू-शिल्पी, आयुष, साहिल, निशिल, लविश, इशिका, कोहिना, आर्या, सार्थक, आर्यमान जैन एवं समस्त कपस्या परिवार हाटकापुरा, चन्देरी (म.प्र.)

अपनी बात

ऐतिहासिक एवं पुरातत्व नगरी चन्देरी में प्राकृतिक सम्पदाओं की कमी नहीं है। यहाँ के पूर्वजों ने चन्देरी के वैभव को बढ़ाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया है और आज भी यहाँ के निवासी इस परम्परा में शामिल हैं। यहाँ पर जैन-जैनेतर समाज का वैभव दिखाई देता है जिसमें खन्दारगिरि, प्राचीन चौबीसी एवं हाटकापुरा के मंदिर अतिशयकारी मंदिरों के रूप में प्रसिद्ध हैं। यहाँ से लगे हुए प्राणपुरा एवं रामनगर के मंदिरों के अतिशय भी कम नहीं हैं।

हाटकापुरा चन्देरी के जैन मंदिर में मूलनायक १००८ श्री चन्द्रप्रभु भगवान की अतिशयकारी प्रतिमा लगभग ५२५ वर्ष प्राचीन है जिनके अतिशय सर्वविदित हैं। अभी हाल में ही इस युग के संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित सर्वश्रेष्ठ आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद से उनके सुयोग्य शिष्य कविहृदय बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज की प्रेरणा एवं सान्निध्य में अतिशयपूर्ण पंचकल्याणक प्रतिष्ठा संपन्न हुई। मुनिश्री ने अनेक पूजा-विधानों की सुंदर रचना की हैं। यहाँ के भक्तों के निवेदन पर मुनिश्री ने अति अल्प समय में यह पूजन-आरती-चालीसा आदि की रचना कर दी, जिसे ''चन्देरी के चन्द्रप्रभु'' नाम से अलंकृत किया गया। मैंने ने इसकी संयोजना कर भक्तों के हाथों तक पहुँचाया एवं मंदिर कमेटी ने इस कृति के प्रकाशन का पुण्य प्राप्त किया। इस कृति से सभी श्रद्धालु अतिशयकारी धर्माजन करें इसी भावना के साथ...

– बा. ब्र. संजय भैयाजी (मुरैना)

विषय सूची

विषय	पृ. कृ.
1. मंगल भवना	4
2. मंगलाष्टक	5
3. अभिषेकपाठ	7
4. अभिषेक गीत	13
5. वृहद् शांतिधारा	14
6. अभिषेक आरती	17
7. पूजन पीठिका	18
8. नवदेवता पूजन	26
9. अर्घ्यावली	30
10. अतिशयकारी चंद्रप्रभु पूजन	37
11. महाऽर्घ्य-शांतिपाठ-विसर्जन	43
12. चालीसा	46
13. आरती	47
14. समाधि भावना	48

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शांति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पञ्च णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥1॥ तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥2॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥3॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥4॥ तेरा...

===

मंगलाचरण

मंगलं भगवान्नर्हन् मंगलं सुसिद्धेश्वरः, मंगलं श्रमणाचार्यो मंगलं साधुपाठकौ।
मंगलं जिननामानि मंगलं नवदेवता, मंगलं शाश्वतमन्त्रं मंगलं जिनशासनं॥

मंगलाष्टक स्तोत्र

[अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिन-शासनोन्- -नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रया-राधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम्॥]
श्रीमन्-नम्र-सुरा-सुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत-रत्नप्रभा-,
भास्वत्-पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम् -भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध-सूर्य-नुगतास्-ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगि-जनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥1॥
सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्त-ममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति - श्री - नगराऽधिनाथ-जिनपत्-युक्तोऽपवर्ग-प्रदः।
धर्मः सूक्ति-सुधा च चैत्य-मखिलं चैत्यालयं श्चयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विध-ममी कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥2॥
नाभेयादि - जिनाः प्रशस्त-वदनाः-ख्याताश्-चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रति-विष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोतरा विंशतिस्-
त्रैकाल्ये प्रथितास्-त्रिषष्टि-पुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥3॥
ये सर्वौषधि-ऋद्धयः सुतपसां वृद्धिङ्गताः पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्ग-महा-निमित्त-कुशलाश् चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञान-धरास्-त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥4॥
ज्योतिर्-व्यन्तर-भावनाऽ-मरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,

जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकार-गिरौ च कुण्डल-नगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥5॥
कैलासे वृषभस्य निर्वृति-मही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य-सज्जिनपतेः सम्मेद-शैलेर्-हताम्।
शेषाणा-मपि चोर्जयन्त-शिखरे, नेमीश्वरस्-यार्हतो,
निर्वाणा-वनयः प्रसिद्ध-विभवाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥6॥
सर्पो हारलता भवत्-यसिलता सत्पुष्प-दामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्न-मनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥7॥
यो गर्भाऽ-वतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषे-कोत्सवो,
यो जातः परि-निष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्य-पुरप्रवेश-महिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥8॥
इत्थं श्री जिन-मंगलाष्टक-मिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्-तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च-सुजनैर्-धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मी-राश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मी-रपि॥
[विद्यासागर विश्ववंद्य श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे।
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थ-सिद्धिप्रदं॥
ज्ञानध्यान-तपोभिरक्त-मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयं।
साकारं श्रमणं विशालहृदयं, सत्यं शिवं सुन्दरं॥]

(पुष्पांजलिं...)

===

जलशुद्धि मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्ममहापद्म-तिगिञ्छकेसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीक-गङ्गासिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता - सीतासीतोदा - नारीनरकान्ता - सुवर्णरूप्यकूला - रक्तारक्तोदा क्षीराम्भोनिधि-जलं सुवर्णघटप्रक्षिप्तं नवरत्नगन्धाक्षत-पुष्पार्चितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा इति मंत्रेण प्रसिञ्च्य जलपवित्रीकरणम्।

(जल की शुद्धि करके कलशों में जल भरें)

अमृत स्नान

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

पात्र शुद्धि

(अनुष्टुभ्)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा।

तिलक लगाना

(उपजाति)

पात्रेऽर्पितं चन्दनमोषधीशं, शुभ्रं सुगन्धाहृच्-चञ्चरीकम्।
स्थाने नवांके तिलकाय चर्च्यं, न केवलं देहविकारहेतोः॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वाङ्गशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा। (नवतिलक करें)

अभिषेक पाठ

(आचार्य माघनन्दीकृत)

(वसन्ततिलका)

श्रीमन्-नतामर - शिरस्तट - रत्नदीप्ति
तोयावभासि - चरणाम्बुज - युग्ममीशम्।

अर्हन्तमुन्नत - पद - प्रदमाभिनम्य-,
तन्मूर्ति - षूद्यदभिषेक - विधिं करिष्ये॥

अथ पौर्वाह्णिक (माध्याह्निक/आपराह्णिक) देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्रीपञ्चमहागुरुभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्। (नौ बार णमोकार मंत्र)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमा जिनस्य
संस्नापयन्ति पुरुहूत-मुखादयस्ताः।
सद्भाव-लब्धि-समयादि-निमित्त-योगात्,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि॥

ॐ ह्रीं अभिषेक-प्रतिज्ञायै पुष्पांजलिं क्षिपामि।

(इन्द्रवज्रा)

श्री पीठक्लृप्ते विशदाक्षतोघैः, श्रीप्रस्तरे पूर्ण-शशाङ्ककल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्तां, सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकारलेखनं करोमि। (अभिषेक की थाली में श्रीकार लिखें)

(अनुष्टुभ्)

कनकाद्रिनिभं कम्रं पावनं पुण्य-कारणम्।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः॥

ॐ ह्रीं पीठ (सिंहासन) स्थापनं करोमि। (सिंहासन स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

भृङ्गार - चामर - सुदर्पण-पीठ-कुम्भ-
तालध्वजातप - निवारक - भूषिताग्रे।
वर्धस्व नन्द जयपाठ-पदावलीभिः, सिंहासने
जिन! भवन्त-महं श्रयामि॥

(अनुष्टुभ्)

वृषभादि-सुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवम्॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ।

(श्रीजी विराजमान करें)

(वसन्ततिलका)

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्य - विधौ - सुरेन्द्रः,
क्षीराब्धि-वारिभि-रपूरय-दुद्धि-कुम्भान्।
यांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्,
संस्थापये कुसुम-चन्दन-भूषिताग्रान्॥

(अनुष्टुभ्)

शात-कुम्भीय-कुम्भौघान् क्षीराब्धेस्तोय-पूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान-चन्दनादि-सुचर्चितान्॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

(चारों कोनों में जल के कलश स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

आनन्द - निर्भर - सुर - प्रमदादि-गानै-
र्वादित्र-पूर-जय - शब्द-कलप्रशस्तैः।
उद्गीयमान-जगतीपति - कीर्ति - मेनाम्,
पीठस्थलीं वसु-विधार्चन-योल्लसामि॥

ॐ ह्रीं स्नपनपीठ-स्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ायें)

(निम्न शलोक पढ़कर जल की धारा करें)

कर्म-प्रबन्ध-निगडै-रपि हीनताप्तम्
ज्ञात्वापि भक्ति-वशतः परमादि-देवम्।
त्वां स्वीय-कल्मष-गणोन्मथनाय देव!
शुद्धौदकै-रभिनयामि महाभिषेकं[१]॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

(अनुष्टुभ्)

तीर्थोत्तम-भवैर्नीरैः क्षीर-वारिधि-रूपकैः।
स्नापयामि सुजन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थ-सिद्धिदान्॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामि स्वाहा।

लघुशांति-मंत्र

(मालिनी)

सकल-भुवन-नाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्दै-
रभिषव-विधि-माप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन-वारां बिन्दु-रेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम्॥

(यहाँ चारों कलशों से अभिषेक करें)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं वं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं इवीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति वृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवंतं कृपालसन्तं श्री वृषादिवीरान्तान् चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवान् आद्यानाम् आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे.... प्रदेशे....नगरे... मासोत्तममासे ....पक्षे .....तिथौ...वासरे मुनिआर्यिकाणां श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादभिषेकं करोमिति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

छत्र त्रयं तव विभाति शशाङ्क-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकर - जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत्-त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्॥

ॐ ह्रीं प्रातिहार्ये छत्रत्रयं स्थापयामि स्वाहा। (छत्र स्थापित करें)

कुन्दावदात-चल-चामर-चारु शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम्।

उद्यच्छशाङ्क-शुचिनिर्झर - वारि-धारि-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्॥

ॐ ह्रीं प्रातिहार्ये चमरद्वयं स्थापयामि स्वाहा। (चँवर स्थापित करें)

पानीय-चन्दन - सदक्षत-पुष्पपुञ्ज-
नैवेद्य-दीपक - सुधूप-फल-व्रजेन।
कर्माष्टक-क्रथन - वीर-मनन्त-शक्तिं,
सम्पूजयामि महसा महसां निधानम्॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते श्री वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं...। (अर्घ्य चढ़ायें)

हे तीर्थपा! निज-यशो-धवली-कृताशाः,
सिद्धौशधाश्च भवदुःख-महा-गदानाम्।
सद्भव्य-हृज्जनित-पङ्क-कबन्ध-कल्पाः,
यूयं जिनाः सतत-शान्तिकरा भवन्तु॥

(पुष्पांजलिं...)

नत्वा मुहुर्निज-करै-रमृतोप-मेयैः,
स्वच्छै-र्जिनेन्द्र तव चन्द्र-करावदातैः।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्त-रम्ये,
देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्ब-मार्जनं करोमि। (श्रीजी का परिमार्जन करें)

स्नानं विधाय भवतोष्ट-सहस्र-नाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम्।
जिघृक्षु-रिष्ट-मिन तेऽष्ट-मयीं विधातुं,
सिंहासने विधि-वदत्र निवेशयामि॥

ॐ ह्रीं सिंहासने जिनबिम्बं स्थापयामि। (वेदी में श्रीजी विराजमान करें)

(अनुष्टुभ्)

जल-गन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरु-दीपसुधूपकैः।
फलैरर्घै - र्जिनमर्चेजन्मदुःखापहानये॥

ॐ ह्रीं पीठस्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ायें)

(वसन्ततिलका)

नत्वा परीत्य निज-नेत्र-ललाटयोश्च,
व्याप्तं क्षणेन हरतादघ-सञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते! तव पाद-योगाद्,
भूयाद् भवातप-हरं धृत-मादरेण॥

(शार्दूलविक्रीडित)

मुक्तिश्री-वनिताकरोदकमिदं पुण्याङ्कुरोत्पादकं,
नागेन्द्र-त्रिदशेन्द्रचक्रपदवी - राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-दर्शन-लता-संवृद्धि-सम्पादकं,
कीर्तिश्री-जयसाधकं तव जिन! स्नानस्य गन्धोदकम्॥

ॐ ह्रीं जिनगंन्धोदकं स्वललाटे धारयामि। (उत्तमाङ्ग पर गंधोदक धारण करें)

(शिखरिणी)

इमे नेत्रे जाते सुकृत-जलसिक्ते सफलिते,
ममंदं मानुष्यं कृतीजन-गणादेय-मभवत्।
मदीयाद् भल्लाटा-दशुभतर-कर्माटन-मभूत्,
सदेदृक् पुण्यौघो मम भवतु ते पूजनविधौ॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति अभिषेक क्रिया समाप्तं ॥

===

अभिषेक गीत

जल्दी-जल्दी चलो रे मंदिर, अपना फर्ज निभाने को।
प्रासुक जल से भरो कलशियाँ, प्रभु का न्हवन कराने को॥
जो अभिषेक कराके मैना, पति का कुष्ट मिटाई थी।
जिसके द्वारा श्रीपाल ने, कंचन काया पाई थी॥
जिससे हुए सात सौ सुंदर, वो ही गाथा गाने को।
प्रासुक जल से....
जिस अभिषेक को करके सुरगण, करें महोत्सव स्वर्गों में।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब पूजकर, करें पर्व जिन-भवनों में॥
देवों जैसे करके नमोऽस्तु, आये शीश झुकाने को।
प्रासुक जल से....
श्री जिन का अभिषेक न्हवन कर, दुख कष्टों का कीच हटे।
ऋद्धि-सिद्धि की बात कहें क्या?, मैली आतम चमक उठे॥
रोग शोक भय संकट हर के, वीतरागता पाने को।
प्रासुक जल से....
जिन-अभिषेक महापुण्यों से, बड़भागी कर पाते हैं।
देह शुद्ध कर लेकर कलशे, श्री जी का न्हवन कराते हैं॥
पाप नशा के पुण्य कमा के, भाग्य कमल महकाने को।
प्रासुक जल से....
हमने अपना फर्ज निभाया, भक्त पुजारी बनने का।
तू भी अपना फर्ज निभाले, हम को निज सम करने का॥
'सुव्रत' को आशीष मिले बस, आतम 'विद्या' पाने को।
प्रासुक जल से...।

===

वृहत्-शांतिधारा

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ध्वीं ध्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते। ॐ ह्रीं क्रौं मम पापं खण्डय खण्डय जहि जहि दह दह पच पच पाचय पाचय ॐ नमो अर्हं झं ध्वीं क्ष्वीं हं सं झं वं ह्वः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्वां ह्रीं ह्वूं ह्वें ह्वैं ह्वों ह्वौं ह्वं ह्वः द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः **अस्माकं (धारा करने वाले का नाम)** श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शान्तिरस्तु कान्तिरस्तु कल्याणमस्तु स्वाहा। एवं **अस्माकं** कार्यसिद्ध्यर्थं सर्वविघ्न-निवारणार्थं श्रीमद्भगवदर्हत्सर्वज्ञ-परमेष्ठि-परम-पवित्राय नमो नमः। **अस्माकं** श्रीशान्तिभट्टारकपादपद्म-प्रसादात् सद्धर्म-श्री-बल-आयु-आरोग्य-ऐश्वर्य-अभिवृद्धिरस्तु सद्धर्म-स्वशिष्य-परशिष्य-वर्गाः प्रसीदन्तु नः।

ॐ श्रीवृषभादयः श्रीवर्द्धमानपर्यन्ताश्चतुर्विंशत्यर्हन्तो भगवन्तः सर्वज्ञाः परममङ्गलनामधेया **अस्माकं** इहामुत्र च सिद्धिं तन्वन्तु सद्धर्मकार्येषु इहामुत्र च सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्व-तीर्थंकराय, श्रीमद्रत्नत्रय-रूपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादश-गणसहिताय, अनंतचतुष्टय-सहिताय समवसरणकेवलज्ञान लक्ष्मी-शोभिताय अष्टादश-दोष-रहिताय षट्चत्वारिंशद्गुण-संयुक्ताय परमेष्ठि-पवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयंभुवे सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, त्रैलोक्य-महिताय, अनंत-संसारचक्र-प्रमर्दनाय, अनंत-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्य-वशङ्कराय, सत्य-ज्ञानाय, सत्य-ब्रह्मणे, उपसर्ग-विनाशनाय, घातिकर्म-क्षयङ्कराय अजराय अभवाय **अस्माकं** व्याधिं घ्नन्तु। श्रीजिनाभिषेक-पूजन-प्रसादात् **अस्माकं** सेवाकानां सर्वदोष-रोग-शोक-भय-पीड़ाविनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्व-रोगाप-मृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वारिष्ट-शान्ति-कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वविघ्नशान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं-पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा। **मम (अस्माकं) कामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **रतिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **बलिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **क्रोधं-पापं-वैरं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **अग्निवायुभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वशत्रुविघ्नं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वोपसर्गं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वविघ्नं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराज्यभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वचौरदुष्टभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वसर्पवृश्चिक-सिंहादिभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वग्रहभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदोषं व्याधिं डामरं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वपरमन्त्रं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वात्मघातं परघातं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वशूलरोगं कुक्षिरोगं अक्षिरोगं शिरोरोगं ज्वररोगं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्व नरमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वगजाश्व-गोमहिषाजमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वसस्य-धान्य-वृक्ष-लता-गुल्म-पत्र-पुष्प-फलमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराष्ट्रमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वक्रूर-वेताल-शाकिनी-डाकिनीभयानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्ववेदनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वमोहनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वापस्मारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **अस्माकं अशुभकर्म-जनितदुःखानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-

भिन्दि। **दुष्टजन-कृतान् मन्त्र-तन्त्र-दृष्टि-मुष्टि-छलछिद्रदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदुष्टदेवदानव-वीरनरनाहर-सिंह-योगिनीकृतदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वाष्टकुली - नागजनित-विषभयानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वस्थावर-जङ्गम-वृश्चिक-सर्पादिकृतदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **परशत्रुकृत-मारणोच्चाटन-विद्वेषण-मोहन-वशीकरणादि-कृत-दोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि।

ॐ ह्रीं **अस्मभ्यं** चक्र- विक्रम- सत्त्वतेजो- बलशौर्य- वीर्य-शान्तिः पूरय पूरय। सर्वजीवानन्दनं जनानन्दनं भव्यानन्दनं गोकुलानन्दनं च कुरु-कुरु। सर्वराजानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटम्ब-पत्तन-द्रोणमुख-संवाहानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वानन्दनं कुरु-कुरु स्वाहा।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेम-मारोग्यं, स्वस्ति-रस्तु विधीयते॥

श्रीशान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। **अस्माकं** तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्रधनानि सदा सन्तु। सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

आयुर्वल्लीविलासं सकलसुखफलैर्द्राघयित्वाश्वनल्पं।
धीरं वीरं गभीरं निरुपममुपनयत्वातनोत्वच्छकीर्तिम्॥
सिद्धिं वृद्धिं समृद्धिं प्रथयतु तरणिः स्फूर्यदुच्चैः प्रतापं।
कान्तिं शान्तिं समाधिं वितरतु जगतामुत्तमा शान्तिधारा॥
सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवज्जिनेन्द्रः॥

===

अभिषेक आरती

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ....)

प्रभु का करके अभिषेक, यहाँ सिर टेक, ज्योति उजियारी।
हम करें आरती प्यारी॥

1. श्री वृषभ–वीर–प्रभु चौबीसौं, श्री परमेष्ठी भगवन् पाँचों।
श्री देव–शास्त्र–गुरु नवदेवों की न्यारी, हम करें आरती प्यारी॥
प्रभु का...

2. जैसे अभिषेक निराले हैं, वैसे यह दीप उजाले हैं।
अभिषेक आरती की जग में बलिहारी, हों भव–भव में उपकारी॥
प्रभु का...

3. प्रभु का अभिषेक न्हवन करके, जो करें आरती चित धरके।
उनके टलते दुख दर्द कष्ट बीमारी, वे रह न सकें संसारी॥
प्रभु का...

4. जब अशुभ स्वप्न में भरत फँसे, कर न्हवन आरती भरत बचे।
भरतेश्वर ने आदीश्वर आज्ञा धारी, हुये मुक्ति के अधिकारी॥
प्रभु का...

5. थी श्रीपाल को बीमारी, जिससे मैंना थी दुखियारी।
अभिषेक आरती गंधोदक दुख हारी, वह करे महोत्सव भारी॥
प्रभु का...

6. अभिषेक न धूल धुलाना है, अभिषेक धर्म अपनाना है।
अभिषेक देव स्वर्गों में करके भारी, होते जिन आज्ञाकारी॥
प्रभु का...

7. अभिषेक आरती पूजायें, सौभाग्य पुण्य से मिल पायें।
सो 'सुव्रत' हों जिनशासन के आभारी, अब पायें मोक्ष सवारी॥
प्रभु का...

नित्य नियम पूजन प्रारम्भ

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ ॥1॥
अनंत चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधु के कंत तुम, तीन भुवन के राज ॥2॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार ॥3॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास ॥4॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग-भूप ॥5॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव ॥6॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार ॥7॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल ॥8॥
तुम पद-पंकज पूजतैं , विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय ॥9॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ॥10॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥11॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव ॥12॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव ॥13॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव ॥14॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ॥15॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ॥16॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार ॥17॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान ॥18॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ॥19॥
जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार ॥20॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश ॥21॥

चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय ।।22 ।।

मंगलपाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान् ।।23 ।।
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव ।।24 ।।
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय ।।25 ।।
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म ।।26 ।।
या विधि मंगल करन तें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत ।।27 ।।

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल मन्त्रेभ्यो नमः।(पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्त मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्त लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू
लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहन्त सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते॥ 1॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥ 2॥
अपराजित-मन्त्रोऽयं सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु , प्रथमं मंगलं मतः॥ 3॥
एसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलम्॥ 4॥
अर्हं-मित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥ 5॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं॥ 6॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥ 7॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनकल्याणक महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिन इष्ट(नाथ) महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिननाम महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्त्र नामेभ्यो अर्घ्यं...।

तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी विरचित तत्त्वार्थसूत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भक्तामर स्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे मुनिराज महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा-प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद्-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥ १॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय॥ २॥
स्वस्त्युच् छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद् गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥ ३॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥ ४॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य यमेक एव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्र मह मेक मना जुहोमि॥ ५॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः॥
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः॥

श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः॥
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः॥
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः॥
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः॥

(पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय शुद्ध बोधाः।
दिव्यावधिज्ञान बल प्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 1॥

कोष्ठस्थ धान्योप-ममेक बीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 3॥

प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक बुद्धाः दशसर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग निमित्त विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 4॥

जंघानल श्रेणी फलांबु तंतु, प्रसून बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽगण स्वैर विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 5॥

अणिम्नि दक्षा कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो वपु र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 6॥

सकाम रूपित्व वशित्व मैश्यं, प्राकाम्य मन्तर्द्धि मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 7॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर परा क्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 8॥
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी-र्विषाविषाः दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल विड्जल्ल मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 9॥
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधु स्रवंतो ऽप्य मृतं स्रवंतः।
अक्षीण संवास महान साश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 10॥

(इति परमर्षिस्वस्ति मंगल विधानं परि पुष्पांजलिं...)

चौबीस तीर्थंकरों के नाम व चिह्न

(ज्ञानोदय)

वृषभनाथ का बैल चिह्न है, हाथी अजितनाथप्रभु का।
शंभव प्रभु का घोड़ा प्यारा, बन्दर अभिनन्दनप्रभु का॥
सुमतिनाथ का चकवा पक्षी, पद्मप्रभू का लालकमल।
सुपार्श्वप्रभु का चिह्न साँथिया, चन्द्रप्रभू का चन्द्र विकल॥
मगर चिह्न प्रभु पुष्पदंत का, कल्पवृक्ष शीतलप्रभु का।
है गैंड़ा श्रेयांसनाथ का, भैंसा वासुपूज्यप्रभु का॥
विमलनाथ का सुन्दर शूकर, अनंत जिनवर का सेही।
धर्मनाथ का वज्रदण्ड अरु, शांतिनाथ का हिरण सही॥
कुन्थुनाथ का बकरा प्यारा, मछली अरनाथप्रभु का।
मल्लिनाथ का चिह्न कलश है, कछुआ मुनिसुव्रतप्रभु का॥
श्वेतकमल नमिनाथ देव का, नेमिनाथ का शंख रहा।
पार्श्वनाथ का चिह्न सर्प अरु, वर्द्धमान का सिंह रहा॥

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनायें गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गये जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमायें जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलायें।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लायें॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसायें, वे राख हमें कर देते॥

तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगायें, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलायें, हम जिनके आंसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के कांटे, तजने पुष्पों को लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटायी।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ायें।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलायें, हम काजल जिन्हें लगायें।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखायें॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिरायें, पीछे से चाकू घौंपें॥

बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुये हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबायें।
फिर देकर दाग जलायें, हम जिन पर प्राण लुटायें॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ायें।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वंदन हमारे॥1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुये पूर्ण सपने॥3॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानंद हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शांति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति।।4 ॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे।।5 ॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें।।6 ॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो।।7 ॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी।।8 ॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे।।9 ॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पायें तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय संबंधी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ्य (सखी)

कर नष्ट अष्ट कर्मों को, तुमने निज नगर वसाया।
तब मुक्तिवधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(लय—चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पायें आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य

(सखी)

नहिं केवल अर्घ चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रीआदिनाथ स्वामी अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चंद्रप्रभ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आये हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाये हम॥
अष्टम वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शांतिनाथ स्वामी अर्घ्य (मालती)

जब-जब शांति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शांति विधान रचाये, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बंधन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाये, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ाकर अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्यायें।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जायें॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ायें सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य

(शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अंबर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य

(आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पायें निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥

हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिंब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य

(सखी)

यह अर्घ चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आये।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आये॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचबालयति का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

मूल्यवान जग का यह वैभव, क्षणिक सुखी भर कर सकता।
किन्तु अनंत सुखी बनने यह, तजने की आवश्यकता॥
दया निधे निज शक्ति प्रकट हो, अतः अर्घ यह भेंट करें॥
पूज्य मल्लि प्रभु नेमि पार्श्व, अतवीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य

(दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य

(शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।

सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमायें फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

भजन

(लय-बड़ी देर भई नंदलाला...)

ओ! चन्देरी के चंदा, ओ! शांति-वीर जिनंदा।
चौबीसी भी लगे सनहरी, बरस रहा आनंदा॥
चाँद चकोरे गोरे-गोरे, चन्द्रप्रभु करते जादू।
साँवलिया नेमि-पारस जी, चमक रहे आजू-बाजू॥
करके दर्शन सवससरण सा, झलके परमानंदा॥ ओ! चन्देरी..
शांति प्रदाता शांतिनाथ जी, चौबीसी में शोभ रहे।
ऊँचे-ऊँचे खड्गासन में, महावीर मन मोह रहे॥
विघ्न विनाशक संकटमोचक, करते सबको चंगा॥ ओ! चन्देरी..
भक्तों के हो भाग्य विधाता, भाग्य सितारा चमकाओ।
हे चैतन्य चमत्कारी प्रभु, 'सुव्रत' को भी अपनाओ॥
तेरा मंगल मेरा मंगल, बहे यहीं जिन-गंगा॥ ओ! चन्देरी..

===

अतिशकारी मूलनायक

श्री चन्द्रप्रभु पूजन

स्थापना

(दोहा)

हाटकापुरा चन्देरी के, चन्द्रप्रभु भगवान।
तथा सभी जिनराज को, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(शंभु)

जब मंदिर का निर्माण हुआ, तो चन्द्रप्रभु आये होंगे।
तब कैसा पर्व हुआ होगा, हम वह ना देख सके होंगे॥
वह उत्सव पर्व मनाने को, हम पलक-पाँवड़े बिछा रहे।
प्रभु हृदय वेदिका पर तिष्ठो, हम करके नमोऽस्तु बुला रहे॥

ॐ ह्रीं हाटकापुरा चन्देरी स्थित चन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

इस जन्म-मरण के चक्कर में, अपने घर द्वार वसाये हैं।
फिर उनमें ऐसे उलझे कि, मंदिर भगवन विसराये हैं॥
हम जल से भूल सुधार सकें, मंदिर में रोज जयोऽस्तु हो।
सो हाटकापुरा चन्देरी के, श्री चन्द्रप्रभु को नमोऽस्तु हो॥1॥

ॐ ह्रीं हाटकापुरा चन्देरी स्थित चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

दिन-रात समर्पित दुनियाँ को, जिससे केवल दुख-दर्द मिलें।
फिर कैसे जीवन सुखमय हो, कैसे अपने दुख-दर्द मिटें॥
चंदन से भूल सुधार सकें, मंदिर में रोज जयोऽस्तु हो॥
सो हाटकापुरा चन्देरी के, श्री चन्द्रप्रभु को नमोऽस्तु हो॥2॥

ॐ ह्रीं हाटकापुरा चन्देरी स्थित चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं...।

हम जिसको साधे वो रूठे, हम जिसको बाँधे वो टूटे।
हम आप बिना यों बिखर गये, ज्यों बिखरे हों पत्ते सूखे॥
अक्षत से भूल सुधार सके, मंदिर में रोज जयोऽस्तु हो॥
सो हाटकापुरा चन्देरी के, श्री चन्द्रप्रभु को नमोऽस्तु हो॥3॥

ॐ ह्रीं हाटकापुरा चन्देरी स्थित चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

माली ज्यों बाग सँभाल रहे, सो फूल खिलें महके दुनियाँ।
यों हमें सुरक्षित करके प्रभु, महका दो चेतन की बगिया॥
पुष्पों से भूल सुधार सकें, मंदिर में रोज जयोऽस्तु हो॥
सो हाटकापुरा चन्देरी के, श्री चन्द्रप्रभु को नमोऽस्तु हो॥4॥

ॐ ह्रीं हाटकापुरा चन्देरी स्थित चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

यह भूख मौत से दिखे बड़ी ,जो सुबह मिटाओ शाम खड़ी।
इसने हर पाप कराये हैं, पर चन्द्रप्रभु का रस ना चखी॥
हम चरु से भूल सुधार सकें, मंदिर में रोज जयोऽस्तु हो॥
सो हाटकापुरा चन्देरी के, श्री चन्द्रप्रभु को नमोऽस्तु हो॥5॥

ॐ ह्रीं हाटकापुरा चन्देरी स्थित चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

चंदा से दीप जलाते हम, चंदा; चंदा सी जोत भरें।
वे चाँद सितारे से चमके, चंदाप्रभु जिनपर हाथ रखें॥
ये दीप जलें अज्ञान टलें, मंदिर में रोज जयोऽस्तु हो॥
सो हाटकापुरा चन्देरी के, श्री चन्द्रप्रभु को नमोऽस्तु हो॥6॥

ॐ ह्रीं हाटकापुरा चन्देरी स्थित चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

जब कर्मों के आँधी तूफाँ, झकझोर रहे डालें फंदा।
तब अपने प्यारे आँचल में झट, हमें छुपा लेते चंदा॥

चरणों की छाँव न छूट सके, मंदिर में रोज जयोऽस्तु हो॥
सो हाटकापुरा चन्देरी के, श्री चन्द्रप्रभु को नमोऽस्तु हो॥7॥

ॐ ह्रीं हाटकापुरा चन्देरी स्थित चन्द्रप्रभजिनेन्दाय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

चंदा का आशीर्वाद वरद, जिसके सिर पर पल पल होगा।
उसकी भी हर मुश्किल का हल, रे! आज नहीं तो कल होगा॥
पूजा का फ ल आशीष मिले, मंदिर में रोज जयोऽस्तु हो॥
सो हाटकापुरा चन्देरी के, श्री चन्द्रप्रभु को नमोऽस्तु हो॥8॥

ॐ ह्रीं हाटकापुरा चन्देरी स्थित चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फ लं...।

हो आप हमारे माँ बाबुल, हर पल तो ध्यान रखो ज्ञानी।
अब भटक न जाएँ हम बच्चे, बस थामे रहना हे! स्वामी॥
हम अर्घ्य रखें प्रभु दया करें, मंदिर में रोज जयोऽस्तु हो॥
सो हाटकापुरा चन्देरी के, श्री चन्द्रप्रभु को नमोऽस्तु हो॥9॥

ॐ ह्रीं हाटकापुरा चन्देरी स्थित चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

कृष्ण पंचमी चैत्र को, वैजयन्त सुर छोड़।
लक्ष्मणा माँ के गर्भ में, आये चन्द्र चकोर॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णापंचम्यां गर्भमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, जन्मे चन्द्र जिनेश।
महासेन के चन्द्रपुर, उत्सव किये सुरेश॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

ग्यारस कृष्णा पौष में, तजे मोह संसार।
मुनि बनकर तप से सजे, जय-जय बारंबार॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सातें फाल्गुन कृष्ण में, बने केवली नाथ।
चन्द्रपुरी के चन्द्र को, झुकें सभी के माथ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सम्मेदाचल से गये, मोक्ष महल के धाम।
सातें फाल्गुन शुक्ल में, सुर नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(मूलनायक वेदी अर्घ्य)

(ज्ञानोदय)

चन्द्रप्रभु के आजू-बाजू, नेमिनाथ पारस स्वामी।
तथा मूलनायक वेदी पर, जो शाशित अंतर्यामी॥
सबको सादर करके नमोऽस्तु, अर्घ्य चढ़ायें हम बच्चे।
समवसरण में जगह मिले बस, यों वरदान मिले सच्चे॥

ॐ ह्रीं श्री मूलनायक चन्द्रप्रभजिनेन्द्र सहित समस्त जिनेन्द्रभ्यो अर्घ्यं...।

(चौबीसी वेदी अर्घ्य)

शांति कुंथु अरनाथ साथ में, वासुपूज्य सुव्रत देवा।
आदि भरत बाहुबली स्वामी ,पंच बालयति जिनदेवा॥
वर्तमान की चौबीसी को, करके नमोऽस्तु अर्घ्य धरें।
भाव यही है रत्नत्रय की, नैया ले भव पार करें॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र सहित चौबीस तीर्थंकर जिनेन्द्रभ्यो अर्घ्यं...।

(महावीरस्वामी अर्घ्य)

वर्तमान शासननायक प्रभु, महावीर अतिवीरा हैं।
खड्गासन उत्तुंग विराजे, सचमुच! ये तो हीरा हैं॥
हुए पंचकल्याणक जैसे, अतिशयकारी ज्यों सपना।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, हम पर कृपा किये रखना॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तुंग खड्गासन श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(लय–माता तू दया करके)

चंदा बाबा तेरी, महिमा है अपरम्पार।
जो तुम्हें नमोऽस्तु करे, उसका होता उद्धार॥
हमने तो यही सुना, तुम अतिशयकारी हो।
भक्तों के भगवन् हो, तुम मोक्ष सवारी हो॥
तुम रहते हो निज में, पर थामो तुम जिनको।
वो तुम सम शीघ्र बनें, हर सुख होता उनको॥1॥
जब हाटकापुरा आए, तो अतिशय खूब हुए।
तब से अब तक अतिशय, कुछ भी न हीन हुए॥
जिसने भी धन माँगा, वे भी धनवान हुए।
संतान हुई उनके, जो निःसंतान हुए॥2॥
निर्बल भी विजित हुए, वे भी बलवान हुए।
जो भक्त बने साँचे, जल्दी भगवान हुए॥
था समवसरण सुंदर, पर छोटा सा न्यारा।
सो कृपा किये हम पर, हो गया बड़ा प्यारा॥3॥
हैं महावीर ऊँचे, है चौबीसी न्यारी।
जब हुए पंचकल्याण, सब थे विस्मयकारी॥
इतने जल्दी कैसे, क्या कार्य हुए भारी।
पर सब संपन्न हुए, सचमुच अतिशयकारी॥4॥
यह कृपा आपकी है, हम भी हैं आभारी।
ऐसी करुणा हम पर, करना करुणाकारी॥
कि हम भी धर्मी हों, चेतन चैतन्य बनें॥
'सुव्रत' 'विद्या' धर के, आगामी धन्य बनें॥5॥

(दोहा)

चन्द्रप्रभु भगवान के, अतिशय बड़े महान।
हाटकापुरा जिनेन्द्र को, सादर रोज प्रणाम॥

ॐ ह्रीं हाटकापुरा चन्देरी स्थित चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

चन्द्रप्रभु स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, चन्द्रप्रभु जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

भजन

हे! चन्दा तेरी पूजा करूँ मैं-2,
हर पल तेरी अर्चा करूँ मैं॥
सावन का महीना होगा, उसमें होगी राखी।
विष्णु मुनि जैसी सेवा करूँ मैं, हर पल...॥1॥
भादों का महीना होगा, उसमें होगी वारिश।
दसलक्षण की चर्चा करूँ मैं, हर पल...॥2॥
कार्तिक का महीना होगा, उसमें होगी दीवाली।
वीर प्रभु जैसी मुक्ति वरूँ मैं, हर पल...॥3॥
फागुन का महीना होगा, उसमें होगी होली।
अष्टाह्निक के रंग रंगूँ मैं, हर पल...॥4॥
वैशाख का महीना होगा, उसमें होगी अख-ती।
राजा श्रेयांस-सोम सा दान करूँ मैं, हर पल...॥5॥
आषाढ़ का महीना होगा, उसमें होगा चौमासा।
विद्या गुरु की भक्ति करूँ मैं, हर पल...॥6॥

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिंब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववंदना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवंदना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-

महावीरजी-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो-जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शांति दें, करें विश्व कल्याण॥

(जल धारा...)

अपने उर में बह उठे, विश्व शांति की धार।
कर्मों के ग्रह शांति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(चंदन धारा...)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रंथ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शांति आत्म शांति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मंत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिए, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

===

भजन

मेरे चंदाप्रभु, महावीरा प्रभु, देखी चौबीसी प्यारी मजा आ गया।
भक्ति भाव भरा, भक्तों के मन चढ़ा, रूप बदला नया तो मजा आ गया॥

गोरे-गोरे प्रभु, ऊँचे-ऊँचे प्रभु-2, नेमि पारस विराजे प्रभु साथ में-2।
मन को मोह लिया, गुरु से जोड़ दिया-2, देख मंदिर की शोभा मजा..॥
मेरे...

मुझको भगवन मिले, मुझको गुरुवर मिले, विद्या गुरुवर के राज दुलारे मिले-2।
ज्ञान मुझको मिला, मेरा मन भी खिला, मिले सुव्रत गुरु तो मजा..॥
मेरे...

-हिमांशी जैन हाटकापुरा चन्देरी

चालीसा

(दोहा)

परमपूज्य नवदेवता, परमेष्ठी भगवान।
पृथक-पृथक वा साथ में, कर जिनका सम्मान॥
मानगंज[1] के चन्द्र का, गुण चालीसा गायँ।
हाटकापुरा जिनेन्द्र को, कर नमोऽस्तु हम ध्यायँ॥

(चौपाई)

जय हो! जय हो! चन्दा स्वामी, जय हो! जय हो! अंतर्यामी।
जय हो! जय हो! जिनशासन की, जय हो! जय हो! चेतन धन की॥1॥
सोनागिरि में चन्द्रचरण में, समवसरण लागा उस क्षण में।
भर्तृहरि शुभचंद्र कहानी, घटित यहाँ पर हुई जुवानी॥2॥
तभी बुजुर्गों ने अतिशय को, अपने ध्यान रखा आलय को।
चन्द्रप्रभु की वहीं प्रतिष्ठा, करवा लाये धार्मिक निष्ठा॥3॥
अतिशयकारी भगवन को ज्यों, देना चाहा उच्चासन त्यों।
हुई प्रतिष्ठित चौबीसी फिर, आये महावीर श्री जिनवर॥4॥
फिर अति शीघ्र हुए कल्याणक, सबको विस्मयरूप कथानक।
लेकिन चन्द्रप्रभु चरणों से, हुए हुए अतिशय सपनों से॥5॥
ऐसे कितने-कितने अतिशय, हुए हाटकापुरा जिनालय।
तीन वेदियाँ तीन शिखर हैं, ढेरों अतिशय हुए इधर हैं॥6॥
जो धन चाहें वो धन पायें, जो जय चाहें वो जय पायें।
निःसंतान भक्ति कर थोड़ी, पा संतान भरें निज गोदी॥7॥
छात्रों को झट मिले सफलता, भूले भटकों को पथ मिलता।
शरण मिले हम शरणार्थी को, शिविर मिले शिव शिविरार्थी को॥8॥
मिल जाता पथ मोक्षार्थी को, मिले धर्म सुख धर्मार्थी को।

1. हाटकापुरा का प्राचीन नाम मानगंज था

पाप बुराई कर्म नष्ट हों, विद्यागुरू पा भक्त शिष्य हों॥9॥
इसी भाव से हम भक्तों ने, चालीसा गाया भव्यों ने।
उस पदवी पर हम ललचाये, मानगंज के जो प्रभु पाये॥10॥
यह अर्जी मंजूर करो तुम, आशीर्वाद यही दे दो तुम।
करें नमोस्तु 'सुव्रतसागर', चारु चन्द्र सम बनें उजागर॥11॥

(दोहा)

भावभक्ति से कर रहे, चन्द्रप्रभु गुणगान।
चालीसा गाकर बनें, आगामी भगवान॥
भावभक्ति से जो करें, चालीसा का पाठ।
यश धन सुख वा मोक्ष का, बने वही सम्राट॥

===

आरती मूलनायक श्री चन्द्रप्रभु भगवान

(लय- विद्यासागर जी महाराज, आज थारी आरती उतारूँ...)

चन्द्रप्रभु जी जिनराज, आज तेरी आरती उतारूँ-2
आरती उतारूँ तेरी मूरत निहारूँ-2। चन्द्रप्रभु...
नगर चन्देरी हाटकापुरा के-2, पूज्य मूलनायक चंदा से-2
अष्टम तीर्थेश जिनराज...आज.....॥ चन्द्रप्रभु जी...
चेतन चन्द्रोदय के चाँद चकोरे-2, महासेन लक्ष्मणा के छोरे-2
चन्द्रपुरी के युवराज....आज....॥ चन्द्रप्रभु जी...
देवपूज्य हो अतिशयकारी-2, विघ्नविनाशक मंगलकारी-2
भक्तों के हो सरताज....आज....॥ चन्द्रप्रभु जी...
जग जो चाहे जग वो पाये-2, तुमसे अपने काम बनाये-2
रखना हमारी भी लाज...आज....॥ चन्द्रप्रभु जी...
ऋद्धि-सिद्धि यश धन के दाता-2, टूटे न तुमसे भक्तों का नाता-2
'सुव्रत' को मिले महाराज....आज...॥ चन्द्रप्रभु जी...

समाधि भावना

भगवन् सदैव मुझ पै, हो छत्र छाया तेरी।
चरणों में आपके ही, होवे समाधि मेरी॥ हो छत्र-छाया तेरी...
1. दर्शन तुम्हारा करके, सिर भी तुम्हें झुकाऊँ।
शास्त्रों का पान करके, तुम सा ही रूप पाऊँ॥
सत्संग करने मुझसे, होवे कभी न देरी। चरणों...
2. पर के न दोष बोलूँ, बोलूँ मधुर वचन मैं।
आगम का ले सहारा, अपना करूँ मनन मैं॥
जब तक न मोक्ष पाऊँ, रख लेना लाज मेरी। चरणों...
3. जब भी मरण हो मेरा, संन्यास से मरण हो।
मुनियों के साथ गुरु के, चरणों की बस शरण हो॥
जिनवाणी माँ की गोदी, छवि सामने हो तेरी। चरणों...
4. बचपन से आपके जो, चरणों की की हो सेवा।
यदि चाहते उसी का, बस फल यही दो देवा॥
णमोकार जपते-जपते, सल्लेखना हो मेरी। चरणों...
5. जब तक मुझे मिले ना, निर्वाण की नगरिया।
तब तक चरण तुम्हारे, मेरे मन में हो सँवरिया॥
मेरा हृदय न छोड़े, चरणों की छाँव तेरी। चरणों...
6. बस एक भक्ति तेरी, दुख संकटों को हरती।
बोधि समाधि दे के, सुख संपदा भी भरती॥
ओंकारमय बना दो, हर श्वाँस नाथ मेरी। चरणों...
7. जयवंत हो जिनशासन, हो जय-जिनेन्द्र नारा।
निर्ग्रंथ पंथ धारूँ, तजूँ पाप पंथ सारा॥
'सुव्रत' की प्रार्थना ये, बरसे कृपा घनेरी। चरणों...

===